RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-06
June-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i06.029

स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

डॉ0 रूबी कुमारी

पी0 एच0 डी0 इतिहास बी0 एन0 एम0 यू0, मधेपुरा (बिहार)

1905 में लार्ड कर्जन ने भारतीय एकता को नष्ट करने के लिए राष्ट्रवाद का सबसे बड़ा केन्द्र बंगाल को 16 अक्टूबर को विभाजित करने का निर्णय लिया। बंग–भंग विरोधी नेताओं ने उस दिन ''राष्ट्रीय शोक दिवस'' मनाने की सार्वजनिक धोषणा कर दी। बंग–भंग आन्दोलन के समय स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन चलाने का विचार सबसे पहले पूना के गोपाल राव देशमुख के मन में उठा था। जिन्होंने लोकहितवादी के नाम से जाना जाता था। उन्होंने 1840–50 क दशक में ही भारतीय ग्रामीण उद्योगों के संरक्षण के लिए स्वदेशी का प्रचार प्रारंभ किया था। 1870–80 के दशक क प्रारंभ में महादेव रानाडे ने अपने व्याख्यानों व लेखों द्वारा स्वदेशी का प्रचार किया। जिसे समाज में फैलाने का काम उनकी पत्नी रामाबाई रानाडे व उनके सहयोगियों ने किया।

उन दिनों कई लोगों ने स्वदेशी का ब्रत लिया और स्वदेशी वस्तुओं की दुकाने भी खोली। सार्वजनिक सभा के एक प्रतिनिधि गणेश वासुदेव जोशी जब 1877 के दिल्ली दरवार में गये थे, उन्हीं दिनों अहमदावाद में भी कुछ स्वदेशी प्रेमी लोगों ने मिलकर स्वदेशी उद्यम वर्धक मंडल की स्थापना की थी। बालगंगाधर तिलक भी अपने 'केसरी' पत्र के माध्यम से ब्रितानी–शोषण की आलोचना के साथ प्रचार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के पक्ष में वातावरण बना रहे थे। फिर 1903 में अहमदावाद में स्वदेशी वस्तु रक्षा समिति की स्थापना के साथ तो स्वदेशी आन्दोलन की भी जैसे शुरूआत कर दी गई थी। पर स्वदेशी आन्दोलन की राजनैतिक आन्दोलन का अंक सबसे पहले बंग–भंग विरोधी आन्दोलन काल में ही बनाया गया, जिसका सूत्रपात एक पंजाबी आर्य समाजी टहलराम गंगाराम ने किया। 17 जुलाई 1905 को रिपन कॉलेज में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की अध्यक्षता में हुई एक सार्वजनिक सभा मं विधिवत प्रस्ताव पास कर लोगों से अपील की गयी कि जब तक बंग–भंग रद्द न किया जाए, ब्रिटेन की व विदेशों की बनी सभी वस्तुओं का बहिष्कार करें। इस आन्दोलन में महिलाओं की विशेष भूमिका रही। बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब की महिलाएं अधिक ही सक्रिय थी। उन दिनो धोर अशिक्षा के कारण महिलाओं में विशेष जागृत नहीं थी। फिर भी इस अवसर से वे पीछे नहीं रहीं। गाँव–गाँव के घर–घर महिलाएं चर्खा चलाती ही थी, अब उनका प्रचार जोरों से होने लगा। राष्ट्रीय फंड में पैसा और आभूषण दान दिया जाने लगा। घर–घर मुट्ठी भर अनाज के रूप में भी आन्दोलन फंड जमा हो रहा था। मुर्शिदाबाद जिले के बोनोर्कद गाँव में स्वदेशी प्रचार के लिए 500 महिलाओं की सभा हुई जिसमें कई स्त्रियों ने आभूषण दिए। प्रान्तीय सम्मेलन में ताराप्रसन्न बोस की पत्नी सरोजिनी बोस व श्रीमति गांगुली ने स्वराज्य तक आभूषण न पहनने की शपथ ली। क्रिस्टो मित्तर की लड़की कुमारी कुमुदिनी मित्तर इस अवधि में बहुत सक्रिय रहीं। नोआखली की भागवती ने काली का आह्वान करते हुए राष्ट्रीय गान लिखे। सियालकोट की सुशीला देवी जगह–जगह भाषण देकर चेतना जगा रही थीं। लाहौर के बरिस्टर रौशन लाल की पत्नी हर देवी हिन्दी पत्रिका 'भारत भगिनी' का संपादन कर रही थीं। उन्होंने सभाओं के आयोजन, फंड एकत्रण, समाज–सुधार व राजनैतिक कैदियों की मदद के लिए अभियान जारी रखा। आर्य समाज की सदस्याओं में हिसार की अग्रणी पूरन देवी स्वदेशी–प्रचार के हर जिले का दौरा कर रही थीं। जगह–जगह वे लोगों का हिन्दू–मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण के लिए तथा बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में और युवकों को सरकारी नौकरियों में न भेजने के लिए तैयार कर रही थीं। कूका नेत्री हुक्मी भी लुधियाना व मलेर कोटला क्षत्रों में सक्रिय थी। दिल्ली की आज्ञावती और वेद कुमारी महिला सभाओं से आगे बढ़कर पुरूषों की सभाओं में भी भाषण कर रही थी। स्वर्णकुमारी देवी की लड़की सरला देवी चौधरी बंगाल से पंजाब में जाकर बंगाल और पंजाब के बीच सम्पर्क सेतु तो बनी ही थी तिलक के भी सीधे सम्पर्क में थी और महिलाओं के स्वदेशी आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। साथ ही बंगाल और पंजाब से बाहर जगह–जगह दौरा कर इस आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप भी देने में सहायक हुई।

श्री रफी अहमद किदवई की भाभी श्रीमति अनीसा किदवई ने जानकारी दी कि उस जमाने में जब कि मुस्लिम महिलाओं का परदे से बाहर आना कोई सोच भी नहीं सकता था। सुप्रसिद्द देशभक्त शायर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हसरत मुहानी की बेगम मर्दाना भेष बनाकर दिल्ली, देहरादून और अलीगढ़ के बीच यात्राएं करके उनके कार्य में सहयोग दे रही थीं। बेगम हसरत मुहानी के तिलक के गरम दल से सहानुभूति रखने तथा उसकी गतिविधियों में भाग लेने के कारण उन्हें भी जेल जाना पड़ा तथा चक्की भी पीसनी पड़ी थी। बाद में तो वह पर्दा छोड़कर खुल्लमखुल्ला सामने आ गई थी। कहते हैं पर्दा छोड़ देश समाज का कार्य करने वाली वह पहली मुस्लिम महिला थी। 1917 में लार्ड मांटेग्यू से महिला मताधिकार की मांग लेकर मिलने वाले महिला प्रतिनिधि मंडल में भी उन्होंने भाग लिया था। अखिल भारतीय महिला संस्थाओं की संस्थापिकाओं में उनका भी नाम लिया जाता है।

गणेश सावरकर की पत्नी श्रीमती एसू बाई सावरकर ने अपनी एक छोटी सी महिला मंडली बनाकर इन दोनों भाइयों के क्रांति कार्य में बहुमुल्य योगदान दिया था। ऐसे अनेक विवरण वयोवृद्ध के संस्मरणों में बिखरे पड़े हैं, जिन्हें किसी ने लिपिबद्ध नहीं किया। महिलाओं का घर से बाहर आकर काम करना ही जब अच्छा नहीं समझा जाता था और उससे गौरवान्वित होने के बजाय उसे छिपाया जाता था। तब क्रांतिकारी गतिविधियों में सीधे भाग लेना तो बहुत बड़ी बात थी और कदाचित उसे जाहिर करना उससे भी बड़ी।

स्वदेशी बहिष्कार आन्दोलन को सफल बनाने के लिए स्वर्ण कुमारी देवी, एनी बेसेंट, मारग्रेट कजिन्स आदि महिला आन्दोलनकारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। स्वामी अरविन्द घोष ने तो विदेशी वस्तु बहिष्कार आन्दोलन को लोगों की धार्मिक भावना से भी जोड़ दिया। धर्माचार्यों द्वारा व्यवस्था दी गयी और संन्यासी एक बार फिर अपना एकांत का भजन–चिन्तन छोड़कर स्वदेशी आन्दोलन को सफल बनाने में लिए निकल पड़े। पुरोहितों ने धार्मिक संस्कारों में विदेशी वस्तुओं का उपयोग करने से इंकार कर दिया। 28 अगस्त 1905 को धार्मिक उत्सव में 50000 व्यक्तियों ने काली माता के सामने शपथ ली कि वे विदेशी वस्तुओं की खरीदारी नहीं करेंगे। दुर्गा–पूजा उत्सव पर बड़े पैमाने पर विदेशी वस्तुओं की बिक्री होती थी, परन्तु इस बार उन दुकानों पर भी सन्नाटा छा गया। कपड़े ही नहीं चीनी, चावल, जूते, साबुन, चुड़ियां आदि सारी विदेशी वस्तुएं गोदामों में पड़ी रह गयी। जो उन्हें खरीदता या धारण करता उन्हें लांछित किया जाता। विद्यार्थियों ने विदेशी कागज की उत्तरपुस्तिकाएं तक लौटा दीं और देशी कापियां देने पर ही परीक्षा दी। छोटे–छोटे बच्चों तक ने विदेशी खिलौने लेने और विदेशी दवा पीने से इन्कार कर दिया। महिलाओं ने विदेशी सूत की साड़ी एवं प्रसाधन सामग्री का उपयोग बन्द कर क दिया। बंगाल से स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन देश के अन्य भागों में भी तेजी से फैल गया। महाराष्ट्र में पहले से वातावरण इसके अनुकूल था। तिलक ने बम्बई प्रान्त व देश के दूसरे भागों का तुफानी दौरा कर जगह–जगह लोगों को बताया कि स्वदेशी आन्दोलन बंग–भंग का ही परिणाम नहीं है, यह अंग्रेजो द्वारा लम्बे समय से भारत–शोषण का एक उत्तर है, जो बम्बई, मध्य प्रांत, पंजाब और कुछ देशी रियासतों में इसके स्पष्ट परिणाम दिखाई देने लगा। पूना में विजयादशमी उत्सव विदेशी वस्तुओ की होली जलाकर मनाया गया। इसमें महिलाओं और विद्यार्थियों की भारी संख्यां सहित लगभग 5000 लोग थे। स्वदेशी प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयी। स्वदेशी समर्थक नाटक खेले गये और इस प्रचार के लिए कोष एकत्रित किए।

आन्दोलन की तीब्रता व जनता का जोश जिसमें तिलक को 'द्वितीय शिवाजी' घोषित किया गया और बंगाल में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी 'बंगाल के बादशाह' कहलाने लगें। ये देखकर भारतीय नेताओं का आदर अंग्रेजी शासकों की नजरों में भी बढ़ गया था। इसी से 1909 के 'मिन्टो–माले' सुधार की पृष्ठभ्मि बनी। किन्तु यह सुधार संतोषजनक नहीं था। 1909 कर एक्ट लागू होने के बाद अंग्रेजी शासन का उग्रता से विरोध करने वाली सभी क्रांतिकारी पार्टियों का अंग्रेजो ने दमन किया। पर उन्होंने यह अनुभव नहीं किया कि दमन का असर उल्टा भी होता है। अब उन्हें उग्र दलों का सामना करना पड़ सकता है। नरम दल ने भी अपने असंतोष को जाहिर करने के लिए 1909 की लाहौर कांग्रेस में पृथक निर्वाचन प्रणाली का जोरदार विरोध किया था, पर क्रांतिकारी तो इसका जोरदार उत्तर देने के लिए सक्रिय हो उठे थे। जून 1909 में विनायक दामादर सावरकर के भाई गणेश दामोदर सावरकर की गिरफ्तारी के साथ 'मित्रमेला' की गतिविधियों में तीब्रता आ गई थी जिसका संचालन गुप्त रूप से गणेश सावरकर की पत्नी ऐसूबाई सावरकर तथा उनकी कुछ सहेलियाँ कर रही थी। सरकार ने उनके घर की तलाशी में क्रांतिकारी साहित्य बरामद की तो उन्हें आजीवन कालेपानी की सजा दी साथ ही सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। 21 दिसम्बर 1909 ई0 विनायक सावरकर ने प्रतिक्रिया स्वरूप नासिक जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन को गोली मार दी। एक प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय नेत्री श्रीमति सुशीला ताई बताती है कि वीर सावरकर के भाई श्री गणेश सावरकर की पत्नी श्रीमति एसू बाई सावरकर ने अपनी एक छोटी सी महिला मंडली बनाकर इन दोनों भाइयों के क्रांति कार्य में बहुमूल्य योगदान दिया था। इसी समय मदन लाल धींगरा ने लन्दन में इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट की सभा मे एक अग्रेज अधिकारी कर्जन वाइली की हत्या

कर दी। दरअसल धींगरा न बंगाल का विभाजन करने वाले लार्ड कर्जन की हत्या करने की योजना बनाई थी उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। अगस्त 1909 को धींगरा को फांसी दी गयी। विनायक सावरकर अंग्रजों से इधर–उधर छिप रहे थे तो फ्रांस में मैडम कामा उन्हें मदद करने की कोशिश की लेकिन असफल रहो और पकड़ी गई।

क्रांतिकारी आन्दोलन के दौर में यद्यपि भीकाजी कामा के अलावा क्रांति नेतृत्व में अन्य नाम नहीं मिलते लेकिन यत्र–तत्र क्रांतिकारी गतिविधियों के सफल संचालन में उनकी अप्रत्यक्ष भूमिका उनके कागज–पत्र इधर से ऊधर पहुँचाना, हथियार पहुँचाना और छिपाना उनके लिए शरण–स्थल और भोजन आदि जुटाने के साथ फंड एकत्र करना और समय पर हर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना आदि ज्ञात तथ्य हैं। कहीं–कहीं इनकी भूमिका जिम्मेदारी पूर्ण कार्यों एवं साहसी कृत्यों के रूप में भी रहीं।

संदर्भ सूची :–

1. यंग इंडिया, 26 मार्च 1918.
2. जवाहर लाल नेहरू, एन आटोबायग्राफी, पृष्ठ–86.
3. इण्डिया इन 1905–18, पृष्ठ–103–4.
4. हाइड, मोण्टगोमरी, लार्ड रीडिंग, पृष्ठ–372.
5. सइद एम. एच, पूर्व उद्धृत पृष्ठ–305.
6. खलीकुज्मान चौधरी ''पाथवे टू पाकिस्तान'' पृष्ठ–63–64.
7. गांधी, एम0 के0, बेलगाम का अध्यक्षीय भाषण, टेन्डूलकर पूर्व उद्धृत, खण्ड–2, पृष्ठ–227.
8. वूमन मूवमेंट इन इंडिया– कमलादेवी चट्टोपाध्याय, पृष्ठ–153.
9. वेक–अप इंडिया– एनी बेसेन्ट, पृष्ठ–46
10. भारत का वृहद इतिहास–तृतिय भाग– मजूमदार, पृष्ठ–147–148

RRIJM 2015, All Rights Reserved